Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

मुंशी प्रेमचन्द्र का हिन्दी साहित्य मे योगदान- एक समीक्षा

Dr. Chitra Yadav*

Senior Assistant Professor, Department of Hindi, K.K.P.G. College, Etawah, Uttar Pradesh

सारांश – *हिंदी उपन्यास की परंपरा इतनी गहरी और विभिन्न रंगो से भरपूर है की इस छोटे से लेख में इस विषय को न्याय देना असंभव ही है | प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य को निश्चित दिशा दी है। प्रेमचन्द आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने अपने दौर में रहे हैं, बल्कि किसान जीवन की उनकी पकड और समझ को देखते हुए उनकी प्रासंगिकता और अधिक बढ जाती है। किसान जीवन के यथार्थवादी चित्रण में प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य में अनूठे और लाजवाब रचनाकार रहे हैं। प्रेमचन्द का कथा साहित्य जितना समकालीन परिस्थितियों पर खरा उतरता है,उतना ही बहुत हद तक आज भी दिखाई देता है। उनकी रचनाओं में गरीब श्रमिक, किसान और स्त्री जीवन का सशक्त चित्रण उनकी दर्जनों कहानियों और उपन्यासों में हुआ है, 'सद्गति', 'कफन', 'पूस की रात' और 'गोदान' में मिलता है। 'रंगभूमि', 'प्रेमाश्रम' और 'गोदान' के किसान आज भी गाँवों में देखे जा सकते हैं साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने कहानी और उपन्यास के माध्यम से लोगों को साहित्य से जोड़ने का काम किया, उनके द्वारा लिखे गए उपन्यास और कहानियां आज भी प्रासंगिक हैं।*

----------X----------

प्रस्तावना

मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी के लमही ग्राम में हुआ था। मुंशी प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। उनके पिता अजायबराय डाकखाने में एक क्लर्क थे। बचपन में ही इनकी माता का स्वर्गवास हो गया था तथा उसके बाद सौतेली मां के नियंत्रण में रहने के कारण उनका बचपन बहुत ही कष्ट में बीता। धनपत को बचपन से ही कहानी सुनने का बड़ा शौक था। इसी शौक ने इन्हें महान कहानीकार व उपन्यासकार बना दिया। प्रेमचंद की शिक्षा का प्रारंभ उर्दू से हुआ। पढ़ाई में तेज होने के कारण शीघ्र ही मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली। कठोर परिश्रम के चलते इंटर और बीए भी जल्दी ही पास कर लिया। स्नातक होने के बाद अल्पायु में ही प्रेमचंद का विवाह कर दिया गया। लेकिन मनोनुकूल पत्नी न होने के कारण बाल विधवा शिवरानी देवी से विवाह कर लिया।

प्रेमचंद के उपनाम से लिखने वाले धनपत राय श्रीवास्तव हिन्दी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक हैं। उन्हें मुंशी प्रेमचंद व नवाब राय के नाम से भी जाना जाता है। उन्हें उपन्यास सम्राट के नाम से भी नवाजा गया गया था। इस नाम से उन्हें सर्वप्रथम बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने संबोधित किया था।

प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया जिसने पूरी शती के साहित्य का मार्गदर्शन किया। उनका लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा। वे एक संवेदनशील लेखक, सचेत नागरिक, कुशल वक्ता तथा सुधी संपादक थे। बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में, जब हिन्दी में की तकनीकी सुविधाओं का अभाव था, उनका योगदान अतुलनीय है।

साहित्यिक जीवन एवम सहित्य मे योगदान

प्रेमचंद उनका साहित्यिक नाम था और बहुत वर्षों बाद उन्होंने यह नाम अपनाया था। उनका वास्तविक नाम 'धनपत राय' था। जब उन्होंने सरकारी सेवा करते हुए कहानी लिखना आरम्भ किया, तब उन्होंने नवाब राय नाम अपनाया। बहुत से मित्र उन्हें जीवन-पर्यन्त नवाब के नाम से ही सम्बोधित करते रहे। जब सरकार ने उनका पहला कहानी-संग्रह, 'सोज़े वतन' ज़ब्त किया, तब उन्हें नवाब राय नाम छोड़ना पड़ा। बाद का उनका अधिकतर साहित्य प्रेमचंद के

www.ignited.in

नाम से प्रकाशित हुआ। इसी काल में प्रेमचंद ने कथा-साहित्य बड़े मनोयोग से पढ़ना शुरू किया। एक तम्बाकू-विक्रेता की दुकान में उन्होंने कहानियों के अक्षय भण्डार, 'तिलिस्मे होशरूबा' का पाठ सुना। इस पौराणिक गाथा के लेखक फ़ैज़ी बताए जाते हैं, जिन्होंने अकबर के मनोरंजन के लिए ये कथाएं लिखी थीं। एक पूरे वर्ष प्रेमचंद ये कहानियाँ सुनते रहे और इन्हें सुनकर उनकी कल्पना को बड़ी उत्तेजना मिली। कथा साहित्य की अन्य अमूल्य कृतियाँ भी प्रेमचंद ने पढ़ीं। इनमें 'सरशार' की कृतियाँ और रेनाल्ड की 'लन्दन-रहस्य' भी थी। गोरखपुर में बुद्धिलाल नाम के पुस्तक-विक्रेता से उनकी मित्रता हुई। वे उनकी दुकान की कुंजियाँ स्कूल में बेचते थे और इसके बदले में वे कुछ उपन्यास अल्प काल के लिए पढ़ने को घर ले जा सकते थे। इस प्रकार उन्होंने दो-तीन वर्षों में सैकड़ों उपन्यास पढ़े होंगे। इस समय प्रेमचंद के पिता गोरखपुर में डाकमुंशी की हैसियत से काम कर रहे थे। गोरखपुर में ही प्रेमचंद ने अपनी सबसे पहली साहित्यिक कृति रची।

प्रेमचंद के साहित्य पर सर्वत्र शिव का शासन है – सत्य और सुंदर शिव के अनुचर होकर आते हैं। उनकी कला स्वीकृत रूप में जीवन के लिए थी और जीवन का अर्थ भी उनके लिए वर्तमान सामाजिक जीवन था। वे कभी वर्तमान से दूर नहीं गए। प्रेमचंद ने जीवन का गौरव राग नहीं गाया, न ही भविष्य की हैरत-अंगेज कल्पना की। उन्होंने न तो अतीत के गुण गाए और न ही भविष्य के मोहक सपनों का भ्रमजाल अपने पाठकों के सामने फैलाया। वे ईमानदारी के साथ वर्तमान काल की अपनी वर्तमान अवस्था का विश्लेषण करते रहे। उन्होंने देखा कि बंधन भीतर का है, बाहर का नहीं। एक बार अगर ये किसान, ये ग़रीब, यह अनुभव कर सकें कि संसार की कोई भी शक्ति उनको दबा नहीं सकती तो वे निश्चय ही अजेय हो जाएंगे। अपने मौजी पात्र (मेहता) से कहलवाते हैं, "मैं भूत की चिंता नहीं करता, भविष्य की परवाह नहीं करता। भविष्य की चिंता हमें कायर बना देती है। भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है। हममें जीवनी शक्ति इतनी कम है कि भूत और भविष्य में फैला देने से वह क्षीण हो जाती है। हम व्यर्थ का भार अपने ऊपर लाद कर रूढ़ियों और विश्वासों तथा इतिहासों के मलबे के नीचे दबे पड़े हैं। उठने का नाम नहीं लेते।"

सामाजिक सुधार

प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक जागरूकता के प्रति प्रतिबद्ध है उनका साहित्य आम आदमी का साहित्य है। सामाजिक सुधार संबंधी भावना का प्रबल प्रवाह उन्हें कभी-कभी एक कल्पित यथार्थवाद की ओर खींच ले जाता है फिर भी कल्पना और वायवीयता से कथासाहित्य को निकालकर उसे समय और समाज के रू-ब-रू खड़ा करके वास्तविक जीवन के सरोकारों से जोड़ा। इनकी कहानियों में जहां एक ओर रूढियों, अंधविश्वासों, अंधपरंपराओं पर कड़ा प्रहार किया गया है वहीं दूसरी ओर मानवीय संवेदनाओं को भी उभारा गया है। अपने जीवन काल में वे विभिन्न सुधारवादी और पराधीनता की स्थितिजन्य नव जागरण प्रवृत्तियों से प्रभावित रहे हैं, यथा - आर्यसमाज, गाँधीवाद, वामपंथी विचारधारा आदि। लेकिन समाज की यथार्थगत भूमि पर उसकी सहज प्रवृत्ति में ये प्रवृत्तियाँ जितनी समा सकती है, उतनी ही मिलाते हैं, ठूस कर नहीं भरते। इसीलिए चित्रण में जितनी स्वाभाविकता प्रेमचन्द में देखने को मिलती है, अन्यत्र दुर्लभ है। 'गोदान' में तो यह अपनी पराकष्ठा पर पहुँच गई है। यदि प्रेमचन्द युग का आरम्भ 'सेवासदन' में है, तो उसका उत्कर्ष 'गोदान' में। आदर्शों और विचारधाराओं को वे अपने पात्रों पर थोपते नहीं हैं, बल्कि अन्तर्मन या अन्तरात्मा की आवाज की तरह स्वाभाविक रूप से प्रस्फुटित होने देते हैं।

'सेवासदन' और 'कायाकल्प' में जहाँ साम्प्रदायिक समस्या उठाई गई है, वहीं 'सेवासदन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' में अन्तर्जातीय विवाह की। समाज में नारी की स्थिति और अपने अधिकारों के प्रति उनकी जागरूकता इनके लगभग सभी उपन्यासों में देखने को मिलती है।'गबन' और 'निर्मला' में मध्यम वर्ग की कुण्ठाओं का बड़ा ही स्वाभाविक और सजीव चित्रण किया गया है। हरिजनों की स्थिति और उनकी समस्याओं को 'कर्मभूमि' में सर्वोत्तम रूप से उजागर किया गया है।

स्वाभाविक

अपनी कहानियों में प्रेमचन्द ने अपनी स्वाभाविक भूमि की विरासत को वैसे ही सुरक्षित रखा जैसे अपने उपन्यासों में। उनके सजग द्रष्टापन की उपस्थिति वहाँ भी है। वे 'कफन' के घीसू और माधव हों या 'ईदगाह' का हामिद हो या 'बूढ़ी काकी', उनकी यथार्थ मानसिकता के प्रति प्रेमचन्द जी पूरी तरह सजग हैं। चाहे हामिद ने भले ही अपनी तार्किक प्रतिभा से अपने चिमटे को अन्य बच्चों के खिलौनों से श्रेष्ठ सिद्ध कर दिया हो, लेकिन उन खिलौनों के प्रति उसकी ललक प्रेमचन्द से छुपी नहीं है। घटनाक्रम की स्वाभाविकता का कोई जवाब नहीं

उपन्यास

प्रेमचंद जी का पहला उपन्यास 'सेवासदन' 1918 में प्रकाशित हुआ। इसी के साथ नये युग का सूत्रपात होता है। इसे 'प्रेमचंद

www.ignited.in

युग' या हिन्दी उपन्यास का 'विकास युग' के नाम से जाना जाता है।

यह काल भारतीय स्वंत्रता संग्राम और समाज सुधार संबंधी आन्दोलनों का काल था। अंग्रेज़ी शासन और शिक्षा एवं सभ्यता के प्रभाव से हमारे समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों एवं धार्मिक आडंबरों के ख़िलाफ़ विद्रोह से एक नवीन चेतना और गौरव की भावना का उदय हो रहा था। महात्मा गांधी राजनीतिक मंच पर पूरी तरह से उदित हो गए थे। उनके सत्य, अहिंसा, सदाचार, सत्याग्रह, अस्पृश्यता विरोध, स्त्रियों की उन्नति, ग्राम सुधार, अछूतोद्धार, स्वदेशी आदि से संबंधित विचारधारा का लोगों पर काफ़ी प्रभाव पड़ने लगा था। अन्याय-उत्पीड़न के ख़िलाफ़ विरोध की नई शक्ति का उदय हो चुका था। उत्पीड़क समाज, सामन्त वर्ग आदि से टक्कड़ लेने का साहस लोगों में जगा था। रूस की नवजागृति, विज्ञान के अविष्कार, आदि का हमारे जन-जागरण पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इसलिए कल्पना, रोमांस और चमत्कार-प्रदर्शन के इन्द्रजाल से मुक्ति लेकर हिन्दी उपन्यासकार यथार्थ के कठोर धरातल पर कदम रख कर समाज के हित में साहित्य की रचना करने लगे।[1]

इस नयी रचना-दृष्टि के संवाहक थे **मुंशी प्रेमचंद**। अपने पहले के उपन्यासकारों पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा था, "जिन्हें जगत् गति नहीं व्यापती, वे जासूसी, तिलस्मी चीज़ें लिखा करते हैं।"

देवकीनन्दन खत्री के लिए उपन्यास एक जीवित शक्ति नहीं है, वह मनोरंजन का, उपभोग का, एक उपकरण मात्र है। जीवन में झूठी उत्तेजना लानेवाली एक खुराक है। प्रेमचंद तक आते-आते यह दृष्टिकोण बदल कर विवेक और नीति का दृष्टिकोण हो जाता है। उनके लिए उपन्यास सामाजिक जीवन का निर्माण करनेवाला एक चेतन प्रभाव है। उपयोगिता और सुधार उसके दो ठोस उद्देश्य हैं। नीति और विवेक दो साधन।

प्रेमचंद जी के उपन्यासों में सभी गुण मौज़ूद थे। वे मनोरंजन के साधन भी हैं और सत्य के वाहक भी। इनके उपन्यासों की सबसे प्रमुख विशेषता है उसकी आदर्शवादिता। चरित्रों और उसकी प्रवृत्तियों का निर्देश करने में वे आदर्शोन्मुखी हैं। इस प्रकार 'सेवा सदन' से लेकर 'कर्मभूमि' तक प्रेमचंद जी का सुधारवादी और आदर्शवादी रूप मिलता है। जिसमें वे आश्रमों और सदनों की कल्पना करते हुए दृष्टिगत होते हैं। उन्होंने अपने समय के सामाजिक-राजनीतिक गतिविधि का पूरा चित्र इन उपन्यासों में अंकित किया है। इनके उपन्यासों में आदर्श, कर्तव्य, प्रेम, करुणा, समाज-सुधार, देश-भक्ति, सत्याग्रह, अहिंसा, स्त्री-व्यथा, मध्यवर्गीय मनुष्य की त्रासदी, कृषक जीवन की समस्याएं, मेहनतकश जनता का संघर्ष आदि अनेक जीवन संदर्भों का प्रभावोत्पादक चित्रण हुआ है। उनके उपन्यासों में आदर्शवाद और यथार्थवाद का अद्भुत मेल देखने को मिलता है। वैसे अपने जीवन के प्रारंभिक काल में प्रेमचंद जी आदर्शवादी ही रहे हैं, पर बाद में चलकर जीवन नीरस होते देख यथार्थ का उन्हें पल्लू पकड़ना पड़ता है। ताकि दोनों सम्मिश्रण से उनका जीवन सरलता से पूर्ण हो। 'गोदान' में उनका आदर्शवाद पूरी तरह बिखर गया है और उसका स्थान ले लिया है क्रूर यथार्थ ने। इसे जीवन का महाकाव्य भी कह सकते हैं। 'गोदान' के विषय में **नलिन** जी के विचार हैं,

"गोदान हिंदी की ही नहीं, स्वयं प्रेमचंद की भी एक अकेली औपन्यासिक कृति है, जिसका विराट् विस्तार, निर्मम तटस्थता, यथार्थता और सरलता की पराकाष्ठा तक पहुंचकर अत्यंत विशिष्ट बन गई है। ऐसी शैली किसी एक भारतीय उपन्यास में नहीं मिलती।"

प्रेमचंद के पहले के उपन्यासकारों या उनके समकालीन उपन्यासकारों की भाषा दुरूह और क्लिष्ट हुआ करती थी। सिर्फ़ देवकी नन्दन खत्री की भाषा आडम्बरहीन हुआ करती थी। प्रेमचंद जी ने भाषा की सादगी और सरलता को शैली की विशिष्टता में रूपान्तरित किया।[३]

'कर्मभूमि' प्रेमचंद जी का अंतिम अपूर्ण उपन्यास है। जिसमें क्रांतिकारी भावनाओं के दर्शन होते हैं। प्रेमचंद जी ने समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों की परस्पर स्थिति और उनके संस्कार चित्रित करने वाले उपन्यास 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', की रचना की।

गोदान

यह रचना एक अविवाहित मामा से सम्बंधित प्रहसन था। मामा का प्रेम एक छोटी जाति की स्त्री से हो गया था। वे

www.ignited.in

प्रेमचंद को उपन्यासों पर समय बर्बाद करने के लिए निरन्तर डांटते रहते थे। मामा की प्रेम-कथा को नाटक का रूप देकर प्रेमचंद ने उनसे बदला लिया। यह प्रथम रचना उपलब्ध नहीं है, क्योंकि उनके मामा ने क्रुद्ध होकर पांडुलिपि को अग्नि को समर्पित कर दिया। गोरखपुर में प्रेमचंद को एक नये मित्र महावीर प्रसाद पोद्दार मिले और इनसे परिचय के बाद प्रेमचंद और भी तेज़ी से हिन्दी की ओर झुके। उन्होंने हिन्दी में शेख़ सादी पर एक छोटी-सी पुस्तक लिखी थी, टॉल्सटॉय की कुछ कहानियों का हिन्दी में अनुवाद किया था और 'प्रेम-पचीसी' की कुछ कहानियों का रूपान्तर भी हिन्दी में कर रहे थे। ये कहानियाँ 'सप्त-सरोज' शीर्षक से हिन्दी संसार के सामने सर्वप्रथम सन् 1917 में आयीं। ये सात कहानियाँ थीं:-

1. बड़े घर की बेटी
2. सौत
3. सज्जनता का दण्ड
4. पंच परमेश्वर
5. नमक का दारोग़ा
6. उपदेश
7. परीक्षा

प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में इन कहानियों की गणना होती है।

डॉ. नगेन्द्र लिखते हैं,

"प्रेमचंद जी की बहिर्मुखी सामाजिकता को उसी समय प्रसाद ने चैलेंज किया। प्रसाद ने निर्मम होकर सामाजिक संस्थाओं का गर्हित खोखलापन दिखाया।"

प्रेमचंद युग में ही प्रसाद जी ने 'कंकाल', 'तितली' 'इरावती', जैसे उपन्यासों में इस समाज की घृणित **कुत्सित और ईर्ष्यापूर्ण भावनाओं का पर्दाफाश किया गया है। उन्होंने 'कंकाल' में सामाजिक यथार्थ का** चित्रण कर यह प्रमाणित किया कि वे अतीत में ही रमे रहने वाले रचनाकार नहीं थे, बल्कि उन्हें अपने समय के सामाजिक यथार्थ की भी गहरी जानकारी थी।

इसी समय निराला ने 'अप्सरा', 'प्रभावती', 'निरुपमा', 'चोटी की पकड़', 'बिल्लेसुर बकरिहा', 'कुल्लीभाट' जैसे उपन्यासों से सामाजिक चेतना को एक नया आयाम दिया। 'बिल्लेसुर बकरिहा' और 'कुल्लीभाट' में उन्होंने यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ ही संस्मरणात्मक उपन्यास की एक नई शैली का विकास किया। इनमें हास्य-व्यंग्य की सरसता और तीक्षणता है, जिसके कारण प्रगतिशील चेतना अधिक सघनता एवं प्रामाणिकता के साथ परिपुष्ट होती है।

मचन्द-गबन

'गबन' उपन्यास की कथावस्तु में एक सामाजिक समस्या नारियों की आभूषण प्रियता और मध्यमवर्गीय परिवार या समाज की शेखी या झूठी मान प्रतिष्ठा के प्रदर्शन के कुपरिणामों का उल्लेख है। इस उपन्यास की मुख्य कथा में कई उपकथाथाएं आकर मिल गई हैं। मुख्य कथा है कि रमानाथ एक मध्यवर्गीय परिवार का लापरवाह और उत्तरदायित्वहीन व्यक्ति है जो अपनी पत्नी को खुश करने के लिए झूठी शान शौकत का बखान करके अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखना चाहता हैं। इसके लिए वह सर्राफों से उधार और कर्ज लेकर अपनी डींगें मारने में नहीं चूकता है। वह बहुत ही भीरू और कायर भी है। उसकी पत्नी जालपा किसी भी बात से बढ़कर आभूषणों को ही महत्व देती है। लेकिन रमानाथ चून्गी की नौकरी से पैसे लेकर कर्ज देने के कारण उसको अदा नहीं कर सकता है। वह भागकर कलकत्ता चोर की तरह एक देवीदीन नामक खटीक के यहाँ गुजरकर लेना कबूल कर लेता है। पुलिस के पंजे में आकर के क्रांतिकारियों के विरूद्ध झूठी सहायता करना मंजूर कर लेता है फिर भी अपनी वास्तविकता को दिलों के साथ न तो अपनी पत्नी जालपा को और न घरवालों को ही सूचित करता है। कभी तो बयान बदलना चाहता है कभी पुलिस के डर से बयान दे देता है। उसकी कायरता का नकाब तब उतरता है जब जालपा और देवीदीन उसे घृणा की ठोकरें मारते हैं। उससे वह अन्त में अपने बयान को बदलकर क्रांतिकारियों को सजा से बरी कराकर के स्वयंबरी हो जाता है।

प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में नारी की आभूषण प्रियता से उत्पन्न दुष्परिणामों झूठी मानमर्यादा के प्रदर्शन के परिणामों अनमेल विवाह के परिणामों आदि का चित्रण करके इससे दूर

www.ignited.in

रहने का सुझाव और बोध दिया है। तत्कालीन समस्याओं का चित्रण करके इससे सावधान या दूर रहने का उन्यासकार ने सुझाव अप्रत्यक्ष रूप से दिया है यही इस रचना का उद्देशय है। [३]

कहानी

उनकी अधिकतर कहानियों में निम्न व मध्यम वर्ग का चित्रण है। डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका ने प्रेमचंद की संपूर्ण हिंदी-उर्दू कहानी को प्रेमचंद कहानी रचनावली नाम से प्रकाशित कराया है। उनके अनुसार प्रेमचंद ने कुल ३०१ कहानियाँ लिखी हैं जिनमें ३ अभी अप्राप्य हैं। प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह सोज़े वतन नाम से जून १९०८ में प्रकाशित हुआ। इसी संग्रह की पहली कहानी दुनिया का सबसे अनमोल रतन को आम तौर पर उनकी पहली प्रकाशित कहानी माना जाता रहा है। डॉ॰ गोयनका के अनुसार कानपुर से निकलने वाली उर्दू मासिक पत्रिका ज़माना के अप्रैल अंक में प्रकाशित सांसारिक प्रेम और देश-प्रेम (इश्के दुनिया और हुब्बे वतन) वास्तव में उनकी पहली प्रकाशित कहानी है।

उनके जीवन काल में कुल नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हुए- सोज़े वतन, 'सप्त सरोज', 'नवनिधि', 'प्रेमपूर्णिमा', 'प्रेम-पचीसी', 'प्रेम-प्रतिमा', 'प्रेम-द्वादशी', 'समरयात्रा', 'मानसरोवर' : भाग एक व दो और 'कफन'। उनकी मृत्यु के बाद उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' शीर्षक से 8 भागों में प्रकाशित हुई। प्रेमचंद साहित्य के मुदराधिकार से मुक्त होते ही विभिन्न संपादकों और प्रकाशकों ने प्रेमचंद की कहानियों के संकलन तैयार कर प्रकाशित कराए। उनकी कहानियों में विषय और शिल्प की विविधता है। उन्होंने मनुष्य के सभी वर्गों से लेकर पशु-पक्षियों तक को अपनी कहानियों में मुख्य पात्र बनाया है। उनकी कहानियों में किसानों, मजदूरों, स्त्रियों, दलितों, आदि की समस्याएं गंभीरता से चित्रित हुई हैं। उन्होंने समाजसुधार, देशप्रेम, स्वाधीनता संग्राम आदि से संबंधित कहानियाँ लिखी हैं। [4] उनकी ऐतिहासिक कहानियाँ तथा प्रेम संबंधी कहानियाँ भी काफी लोकप्रिय साबित हुई। प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों में ये नाम लिये जा सकते हैं-

'पंच परमेश्वर', 'गुल्ली डंडा', 'दो बैलों की कथा', 'ईदगाह', 'बड़े भाई साहब', 'पूस की रात', 'कफन', 'ठाकुर का कुआँ', 'सद्गति', 'बूढ़ी काकी', 'तावान', 'विध्वंस', 'दूध का दाम', 'मंत्र' आदि।[5]

नाटक

प्रेमचंद ने संग्राम (1923), कर्बला (1924) और प्रेम की वेदी (1933) नाटकों की रचना की। ये नाटक शिल्प और संवेदना के स्तर पर अच्छे हैं लेकिन उनकी कहानियों और उपन्यासों ने इतनी ऊँचाई प्राप्त कर ली थी कि नाटक के क्षेत्र में प्रेमचंद को कोई खास सफलता नहीं मिली। ये नाटक वस्तुतः संवादात्मक उपन्यास ही बन गए हैं।

लेख/निबंध

प्रेमचंद एक संवेदनशील कथाकार ही नहीं, सजग नागरिक व संपादक भी थे। उन्होंने 'हंस', 'माधुरी', 'जागरण' आदि पत्र-पत्रिकाओं का संपादन करते हुए व तत्कालीन अन्य सहगामी साहित्यिक पत्रिकाओं 'चाँद', 'मर्यादा', 'स्वदेश' आदि में अपनी साहित्यिक व सामाजिक चिंताओं को लेखों या निबंधों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। अमृतराय द्वारा संपादित 'प्रेमचंद : विविध प्रसंग' (तीन भाग) वास्तव में प्रेमचंद के लेखों का ही संकलन है। प्रेमचंद के लेख प्रकाशन संस्थान से 'कुछ विचार' शीर्षक से भी छपे हैं। प्रेमचंद के मशहूर लेखों में निम्न लेख शुमार होते हैं- साहित्य का उद्देश्य, पुराना जमाना नया जमाना, स्वराज के फायदे, कहानी कला (1,2,3), कौमी भाषा के विषय में कुछ विचार, हिंदी-उर्दू की एकता, महाजनी सभ्यता, उपन्यास, जीवन में साहित्य का स्थान आदि।

साहित्य की विशेषताएँ

प्रेमचन्द की रचना-दृष्टि, विभिन्न साहित्य रूपों में, अभिव्यक्त हुई। वह बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। उनकी कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ हैं। अपनी कहानियों से प्रेमचंद मानव-स्वभाव की आधारभूत महत्ता पर बल देते हैं। 'बड़े घर की बेटी,' आनन्दी, अपने देवर से अप्रसन्न हुई, क्योंकि वह गंवार उससे कर्कशता से बोलता है और उस पर खींचकर खड़ाऊँ फेंकता है। जब उसे अनुभव होता है कि उनका परिवार टूट रहा है और उसका देवर परिताप से भरा है, तब वह उसे क्षमा कर देती है और अपने पति को शांत करती है। इसी प्रकार 'नमक का दारोग़ा' बहुत ईमानदार व्यक्ति है। घूस देकर उसे बिगाड़ने में सभी असमर्थ हैं। सरकार उसे, सख्ती से उचित कार्रवाई करने के कारण, नौकरी से बर्ख़ास्त कर देती है, किन्तु जिस सेठ की घूस उसने अस्वीकार की थी, वह उसे अपने यहाँ ऊँचे पद पर नियुक्त करता है। वह अपने यहाँ ईमानदार और कर्तव्यपरायण कर्मचारी रखना चाहता है। इस प्रकार प्रेमचंद के संसार में सत्कर्म का फल सुखद होता है। वास्तविक जीवन में ऐसी

www.ignited.in

आश्चर्यप्रद घटनाएँ कम घटती हैं। गाँव का पंच भी व्यक्तिगत विद्वेष और शिकायतों को भूलकर सच्चा न्याय करता है। उसकी आत्मा उसे इसी दिशा में ठेलती है। असंख्य भेदों, पूर्वाग्रहों, अन्धविश्वासों, जात-पांत के झगड़ों और हठधर्मियों से जर्जर ग्राम-समाज में भी ऐसा न्याय-धर्म कल्पनातीत लगता है[5]। हिन्दी में प्रेमचंद की कहानियों का एक संग्रह बम्बई के एक सुप्रसिद्ध प्रकाशन गृह, हिन्दी ग्रन्थ-रत्नाकर ने प्रकाशित किया। यह संग्रह 'नवनिधि' शीर्षक से निकला और इसमें 'राजा हरदौल' और 'रानी सारन्धा' जैसी बुन्देल वीरता की सुप्रसिद्ध कहानियाँ शामिल थीं।[5]

रचनाओं की रूपरेखा

इसके कुछ समय के बाद प्रेमचंद ने हिन्दी में कहानियों का एक और संग्रह प्रकाशित किया। इस संग्रह का शीर्षक था 'प्रेम-पूर्णिमा'। 'बड़े घर की बेटी' और 'पंच परमेश्वर' की ही परम्परा की एक और अद्भुत कहानी 'ईश्वरीय न्याय' इस संग्रह में थी। शायद कम लोग जानते है कि प्रख्यात कथाकार मुंशी प्रेमचंद अपनी महान् रचनाओं की रूपरेखा पहले अंग्रेज़ी में लिखते थे और इसके बाद उसे हिन्दी अथवा उर्दू में अनूदित कर विस्तारित करते थे। भोपाल स्थित बहुकला केंद्र भारत भवन की रजत जयंती के उपलक्ष्य पर प्रेमचंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर यहाँ आयोजित सात दिवसीय प्रदर्शनी में इस तथ्य का खुलासा करते हुए उनकी कई हिन्दी एवं उर्दू रचनाओं की अंग्रेज़ी में लिखी रूपरेखाएँ प्रदर्शित की गई हैं। प्रदर्शनी के संयोजक और हिन्दी के समालोचक डॉ. कमल किशोर गोयनका ने इस अवसर पर कहा कि प्रेमचंद हिन्दी और उर्दू के साथ-साथ अंग्रेज़ी भाषा के अच्छे जानकार थे। डॉ. गोयनका ने बताया कि प्रेमचंद अपनी कृतियों की रूपरेखा पहले अंग्रेज़ी में ही लिखते थे। उसके बाद उसका अनुवाद करते हुए हिन्दी या उर्दू में रचना पूरी कर देते थे। डॉ. गोयनका ने कहा कि प्रेमचंद ने अपनी महान् कृति 'गोदान' की भी रूपरेखा पहले अंग्रेज़ी में लिखी थी जिसकी मूल प्रति यहाँ प्रदर्शनी में लगाई गई है। उनके एक अलिखित उपन्यास की रूपरेखा भी अंग्रेज़ी में लिखी हुई उन्हें मिली है। प्रेमचंद ने रंग भूमि और कायाकल्प उपन्यासों की रूपरेखा भी अंग्रेज़ी में लिखी थी। उनकी डायरी भी अंग्रेज़ी में लिखी हुई मिली है। वहीं, प्रदर्शनी में पंडित जवाहर लाल नेहरू के अपनी पुत्री को अंग्रेज़ी में लिखे गए पत्रों का अनुवाद हिन्दी में करने के आचार्य नरेन्द्र देव का प्रेमचंद को लिखा गया आग्रह पत्र भी रखा गया है। प्रेमचंद ने पं नेहरू के इन पत्रों को हिन्दी में रूपान्तरित किया था। [6]दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रहे डा. गोयनका ने कहा कि वर्ष 1972 में प्रेमचंद पर पी.एच.डी करने के बाद उन्होंने प्रेमचंद द्वारा रचित 1500 से अधिक पृष्ठों का अप्राप्य साहित्य खोजा। इसमें 30 नई कहानियाँ मिलीं। प्रोफेसर महावीर सरन जैन ने प्रेमचन्द के कथा-साहित्य के भाषिक स्वरूप का विश्लेषण किया।[7]

कृतियां

प्रेमचंद की कृतियां भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियां हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की, किन्तु प्रमुख रूप से वह कथाकार हैं। उन्हें अपने जीवन काल में ही उपन्यास सम्राट की पदवी मिल गई थी। उन्होंने कुल 15 उपन्यास, 300 से कुछ अधिक कहानियां, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल-पुस्तकें तथा हज़ारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की। जिस युग में प्रेमचंद ने कलम उठाई थी, उस समय उनके पीछे ऐसी कोई ठोस विरासत नहीं थी और न ही विचार और न ही प्रगतिशीलता का कोई मॉडल ही उनके सामने था सिवाय बांग्ला साहित्य के। उस समय बंकिम बाबू थे, शरतचंद्र थे और इसके अलावा टॉलस्टॉय जैसे रुसी साहित्यकार थे। लेकिन होते-होते उन्होंने गोदान जैसे कालजयी उपन्यास की रचना की जो कि एक आधुनिक क्लासिक माना जाता है।[8]

पुरस्कार

मुंशी प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाक विभाग की ओर से 31 जुलाई, 1980 को उनकी जन्मशती के अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया। गोरखपुर के जिस स्कूल में वे शिक्षक थे, वहां प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है। इसके बरामदे में एक भित्तिलेख है। यहां उनसे संबंधित वस्तुओं का एक संग्रहालय भी है। जहां उनकी एक आवक्षप्रतिमा भी है। प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी ने प्रेमचंद घर में नाम से उनकी जीवनी लिखी और उनके व्यक्तित्व के उस हिस्से को उजागर किया है, जिससे लोग अनभिज्ञ थे। उनके ही बेटे अमृत राय ने 'क़लम का सिपाही' नाम से पिता की जीवनी लिखी है। उनकी सभी पुस्तकों के अंग्रेज़ी व उर्दू रूपांतर तो हुए ही हैं, चीनी, रूसी आदि अनेक विदेशी भाषाओं में उनकी कहानियां लोकप्रिय हुई हैं।[8]

स्वर्ण युग

प्रेमचंद की उपन्यास-कला का यह स्वर्ण युग था। सन् 1931 के आरम्भ में ग़बन प्रकाशित हुआ था। 16 अप्रैल, 1931 को प्रेमचंद ने अपनी एक और महान् रचना, कर्मभूमि शुरू की।

www.ignited.in

यह अगस्त, 1932 में प्रकाशित हुई। प्रेमचंद के पत्रों के अनुसार सन् 1932 में ही वह अपना अन्तिम महान् उपन्यास, गोदान लिखने में लग गये थे, यद्यपि 'हंस' और 'जागरण' से सम्बंधित अनेक कठिनाइयों के कारण इसका प्रकाशन जून, 1936 में ही सम्भव हो सका। अपनी अन्तिम बीमारी के दिनों में उन्होंने एक और उपन्यास, 'मंगलसूत्र', लिखना शुरू किया था, किन्तु अकाल मृत्यु के कारण यह अपूर्ण रह गया। 'ग़बन', 'कर्मभूमि' और 'गोदान'- उपन्यासत्रयी पर विश्व के किसी भी कृतिकार को गर्व हो सकता है। 'कर्मभूमि' अपनी क्रांतिकारी चेतना के कारण विशेष महत्त्वपूर्ण है। लाहौर कांग्रेस के अधिवेशन में अध्यक्ष-पद से भाषण देते हुए जवाहरलाल नेहरू ने घोषित किया था। 'मैं गणतंत्रवादी और समाजवादी हूँ।' कर्मभूमि इस अशान्त काल की प्रतिध्वनियों से भरा हुआ उपन्यास है। गोर्की के उपन्यास, 'माँ' के समान ही यह उपन्यास भी क्रान्ति की कला पर लगभग एक प्रबंध-ग्रन्थ है। यह उपन्यास अद्भुत पात्रों की एक सम्पूर्ण शृंखला प्रस्तुत करता है। अमर कांत, समरकान्त, सक़ीना, सुखदा, पठानिन, मुन्नी। अमरकान्त और समरकान्त पाठकों को पिता और पुत्र, नेहरू-द्वय का स्मरण दिलाते हैं। मुन्नी, पठानिन, सक़ीना और लाला समरकान्त सभी की परिणति घटनाओं द्वारा होती है।

रूढ़िवाद का विरोध

जिस समय मुंशी प्रेमचन्द का जन्म हुआ वह युग सामाजिक-धार्मिक रूढ़िवाद से भरा हुआ था। इस रूढ़िवाद से स्वयं प्रेमचन्द भी प्रभावित हुए। तब प्रेमचन्द ने कथा-साहित्य का सफर शुरू किया, और अनेकों प्रकार के रूढ़िवाद से ग्रस्त समाज को यथा शक्ति कला के शस्त्र से मुक्त कराने का संकल्प लिया। अपनी कहानी के बालक के माध्यम से यह घोषणा करते हुए कहा कि "मैं निरर्थक रूढ़ियों और व्यर्थ के बन्धनों का दास नहीं हूँ।"

समाज में व्याप्त रुढियाँ

सामाजिक रुढियों के संदर्भ में प्रेमचन्द ने वैवाहिक रुढियों जैसे बेमेल विवाह, बहुविवाह, अभिभावकों द्वारा आयोजित विवाह, पुनर्विवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह, पर्दाप्रथा, बाल विवाह, वृद्धविवाह, पतिव्रत धर्म तथा वारंगना वृद्धि के संबंध में बड़ी संवेदना और सचेतना के साथ लिखा है। तत्कालीन समाज में यह बात घर कर गई थी कि तीन पुत्रों के बाद जन्म लेने वाली पुत्री अपशकुन होती है। उन्होंने इस रूढ़ि का अपनी कहानी तेंतर के माध्यम से कड़ा विरोध किया है। होली के अवसर पर पाये जाने वाली रूढ़ि की निन्दा करते हुए वह कहते हैं कि अगर पीने- पिलाने के बावज़ूद होली एक पवित्र त्योहार है तो चोरी और रिश्वतखोरी को भी पवित्र मानना चाहिए। उनके अनुसार त्योहारों का मतलब है अपने भाइयों से प्रेम और सहानुभूति करना ही है। आर्थिक जटिलताओं के बावज़ूद आतिथ्य- सत्कार को मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का प्रश्न मान लेने जैसे रूढ़ि की भी उन्होंने निन्दा की है।

धार्मिक रुढियाँ

प्रेमचन्द महान् साहित्यकार के साथ-साथ एक महान् दार्शनिक भी थे। मुंशीजी की दार्शनिक निगाहों ने धर्म की आड़ में लोगों का शोषण करने वालों को अच्छी तरह भाँप लिया था। वह उनके वाह्य विधि-विधानों एवं आंतरिक अशुद्धियों को पहचान चुके थे। इन सब को परख कर प्रेमचन्द ने प्रण ले लिया था कि वह धार्मिक रूढ़िवादिता को खत्म करने का प्रयास करेंगे। [9]

साहित्य में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय

महोबा। साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने कहानी और उपन्यास के माध्यम से लोगों को साहित्य से जोड़ने का काम किया, उनके द्वारा लिखे गए उपन्यास और कहानियां आज भी प्रासंगिक हैं।

यह उद्गार पूर्व प्रधानाचार्य शिव कुमार गोस्वामी ने बुधवार को सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज में मुंशी प्रेमचंद जयंती पर आयोजित गोष्ठी में व्यक्त किए। मुंशी प्रेमचंद के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि मुंशी प्रेम चंद ने एसडीआई के पद पर रहते हुए जिले में पांच साल बिताए। उन्होंने गांवों में जाकर जो कुछ भी देखा, उसको अपनी कहानियों के माध्यम से सबसे सामने रखा, जो कि आज भी प्रासंगिक प्रतीत होता है।
प्रधानाचार्य विपिन बिहारी द्विवेदी ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद की कहानियां ह्रदय को छू लेने वाली हैं। महोबा मुंशी प्रेमचंद की कर्मभूमि रही है। कहा कि साहित्य के क्षेत्र में मुंशी जी ने जिले को नई पहचान दिलाई। संगीताचार्य पं. जगप्रसाद तिवारी ने कहा कि आत्माराम की कहानी पनवाड़ी ब्लाक के बैंदों गांव की कहानी है, जबकि मंत्र कहानी चरखारी ब्लाक के अकठोहां गांव पर आधारित है। कहा कि मुंशी प्रेमचंद गाँव में प्राइमरी स्कूल का निरीक्षण करने जाते थे और गांवों की ज्वलंत समस्याऔ को देखकर अपने शब्द में कहानी के रूप में लिखते थे। इस मौके पर केएल सैनी, जयनारायण तिवारी, प्रियव्रत अग्रवाल, आदित्य मिश्र, गिरीश सक्सेना, ब्रजलाल श्रीवास, रवींद्र चौरसिया, अनिल कुमार, स्वतंत्र मिश्र, देवीचरण शुक्ला, राम प्रसन्न त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।[10]

www.ignited.in

उपसंहार

प्रेमचंद ने अपने जीवन के कई अदभूत कृतियां लिखी हैं। तब से लेकर आज तक हिन्दी साहित्य में ना ही उनके जैसा कोई हुआ है और ना ही कोई और होगा। अपने जीवन के अंतिम दिनों के एक वर्ष को छोड़कर उनका पूरा समय वाराणसी और लखनऊ में गुजरा, जहां उन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया और अपना साहित्य-सृजन करते रहे। 8 अक्टूबर, 1936 को जलोदर रोग से उनका देहावसान हुआ।

संदर्भ-सूची

1. प्रेमचन्द : जीवन परिचय (हिन्दी) (एच.टी.एम.एल)। अभिगमन तिथि: 9 नवंबर, 2010
2. अध्याय 16, पृ. 574, हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ॰ नगेन्द्र, 33वां संस्करण-2007, मयूर पेपरबैक्स, नौएडा
3. प्रो. डी.पी. चन्द्रवंशी, “हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द्र का योगदान” Research Journal of Humanities and Social Sciences 2015
4. "प्रेमचंद की हिंदी कहानी, Premchand ki hindi kahani, हिंदी कहानी के सम्राट मुँशी प्रेमचंद की कहानी, मुंशी प्रेमचंद,Premchand ki Kahani ka sangrah,premchand hindi story, munshi premchand ki kahaniyan, hindi stories munshi premchand, premchand hindi novels, B". *Hindisamay.com हिंदी साहित्य सबके लिए*. अभिगमन तिथि 19 दिसम्बर 2017.
5. प्रेमचंद (2003), प्रेमचंद की 75 लोकप्रिय कहानियाँ, दिल्ली, भारत: राजा प्रकाशन, आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰
6. हहदी साहित्यद का इवतहास : प्रेमचंद्र शुक्ल
7. प्रेमचंद 1936. साहित्य के उद्देश्य.
8. कृतियों की रूपरेखा अंग्रेज़ी में लिखते थे प्रेमचंद (हिन्दी) (एच.टी.एम.एल)। अभिगमन तिथि: 9 अक्टूबर, 2010
9. https://hindi.webdunia.com/hindi-essay/essay-on-premchand-in-hindi-117073100050_1.html
10. मनोज कुमार पर 8:50 pm लेबल: उपन्यास साहित्य, प्रेमचंद, मनोज कुमार, साहित्यकार

Corresponding Author

Dr. Chitra Yadav*

Senior Assistant Professor, Department of Hindi, K.K.P.G. College, Etawah, Uttar Pradesh

www.ignited.in